

परिस वेधशाला



प्रायोगिकमयों का दृष्टिरथा



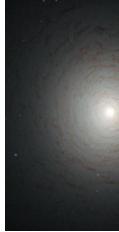
गणिजना स्टारज़िरका

उत्तर पहने के पीछे

ब्रह्मांड मेरी जेब में



इनमें से कौनसे
वित्र में गैलेक्सी
नहीं हैं?

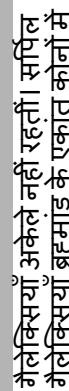


परश्वनोतरी



परिस वेधशाला

गैलेक्सियाँ का मैलजायाव



ननुक अन्ते पर गैलेक्सियाँ कई प्रकार
गैलेक्सियाँ का मैलजोल सिफ्ट उनका
आकार हो नहीं बदलता। ये मैलजोल नना
तारों के जनम का भी कारण बन सकता
है।

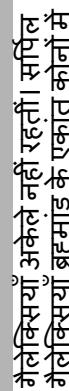


बहुमन्तरिक्ष का बाहर, ये आकाशगंगा में
मैलजोल रहते हैं।

करीब सभी गैलेक्सियाँ ने कभी ना कभी

करीब सभी गैलेक्सियाँ ने कभी ना कभी
आकार हो नहीं बदलता। ये मैलजोल नना
तारों के जनम का भी कारण बन सकता
है।

निहारिका से गैलेक्सी तक



आसमान में और भी धूधले बातल दिखते
हैं। १९८२ में चाल्स बेसिये ने १४ ऐसे
बादल अपनी जानी मानी प्रणाली में छापे
थे।



बहुमन्तरिक्ष का बाहर, ये आकाशगंगा में
मैलजोल रहते हैं।

मैलजोल रहते हैं।

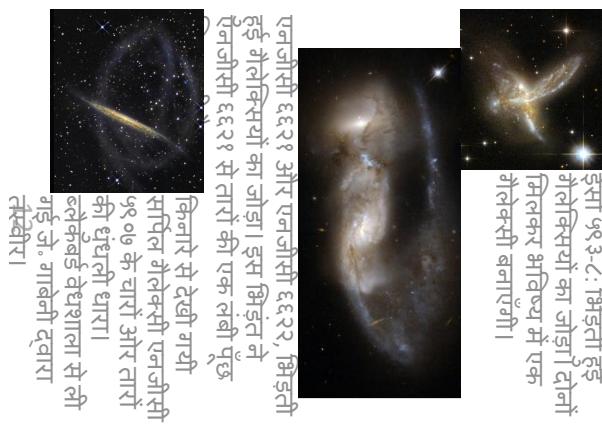
एस ३३, एंड्रोमेडा ग्रोप का मैलजोल रहते हैं। ये मैलजोल
मैलजोल रहते हैं। ये मैलजोल रहते हैं।

अंडाकार गैलेक्सियाँ
अंडाकार गैलेक्सियाँ गोठ या लम्बी हो
सकती हैं। सर्विल गैलेक्सियाँ के
विपरीत, अंडाकार गैलेक्सियाँ समान
और धूधली होती हैं। ये गैलेक्सियाँ पूराने
तारों में बनी होती हैं, जो इन्हें पक्क
तालिमा में रख देते हैं। इनमें ग्रेस और
धूल भी कम होता है।

मैलजोल गैलेक्सियाँ, जो
'बोने अंडाकार गैलेक्सियाँ' भी
प्रकाश वर्ष बड़ी होती हैं (हमारे
आकाशगंगा से दस गुना छोटी) और
इनमें सिर्फ एक कर्णड़ तारे होते हैं। मैलजोल
बड़ी अंडाकार गैलेक्सियाँ तक दस
लाख प्रकाश वर्ष बड़ी होती हैं, और इनमें
१०१ से भी ज्यादा तारे होते हैं।

मैलिल गैलेक्सियाँ से विपरीत, अंडाकार
गैलेक्सियाँ में तारे एक दिशा में ना
धमका किमी भी निशा में चलते हैं।

दो अंडाकार गैलेक्सियाँ: एनजीसी ३३११ और
एनजीसी ३३०१।
ये तत्स्वीर एलिजाबेथ वेनर और विलियम
हीरिस ने जॉनली दृष्टिगणना स्कॉप से ली।



निहारिका से गैलेक्सी तक
मैलिल गैलेक्सियाँ का जोड़ा दोनों
मिलकर भविष्य में एक
गैलेक्सियाँ के एकत करता है।
पाइपलाइन रेलवे के एक गंगा दूसरे में
मिलकर एक गंगा बनता है। गैलेक्सी भी बना
दूसरे रेलवे करते हैं तारों के लम्बी सी पूँछ
भी छीच लिकलती है।

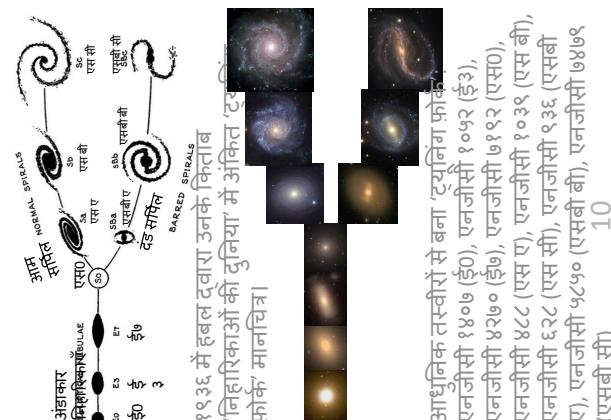
गैलेक्सियाँ का मैलजोल सिफ्ट उनका
आकार हो नहीं बदलता। ये मैलजोल नना
तारों के जनम का भी कारण बन सकता
है।

प्रत्येक गैलेक्सियाँ ने कभी ना कभी
करीब सभी गैलेक्सियाँ ने कभी ना कभी

सर्पिल गैलेक्सियाँ

सापल गैलोक्सिया हमारे आस पास के ब्रह्मांड में पाए जाने वाली बड़ी गैलेक्सियों में सबसे आम है। इनकी बहुत सूखी या वर्किय होती है और एक केंद्रीय उष्मा से बहार की ओर फैलती है। इन चर्किय बाज़ों में हमें गैस और धूप के बादल घूमती हैं, जबकि बाहरी भूमि के होते हैं और अमृत तारे के बीच के तरफ फैलते हैं। ये तारे पीले रंग के होते हैं और अमृत तारे के बीच के तरफ फैलते हैं। ये तारे गैलेक्सियों में आम तौर पर सर्पिल दस लाख साल के होते हैं।

* सौ अंगब
** अमृत



बहामांड मेरी जेब में न. ३

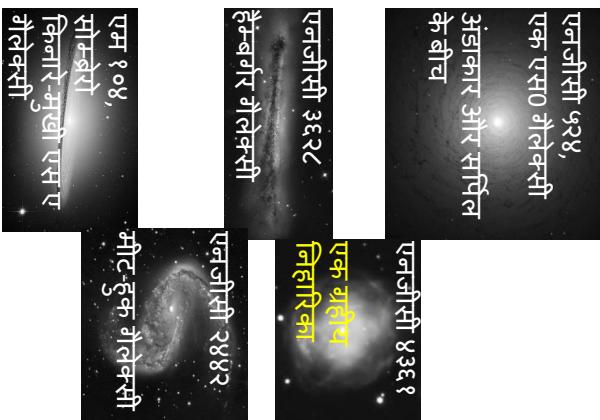
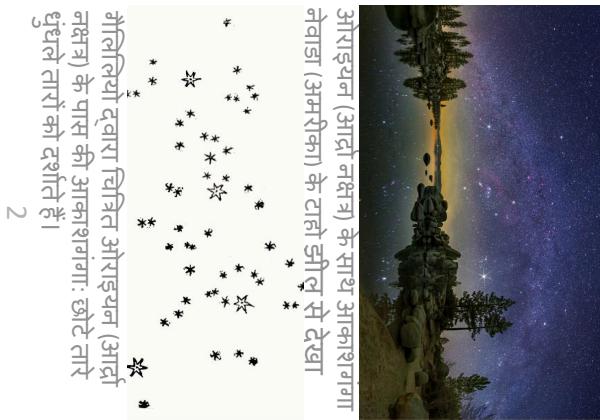
हबल द्वारा उनके निराकार फोटो की विवरणों की तस्वीरें निहारिकाओं की दृश्यावान मानचित्र।

करीब ४०० गैलेक्सियों की तस्वीरें जायाने के बाट, पहलिन हबल ने गैलेक्सियों के आकारों के वर्गीकरण का एक नईका इजाद किया (पिछले पन्ने को देखें)।

कठ आधिक बदलाव, जैसे कि बेंडी और विविध रूपों की बाद भी हबल वर्गीकरण आज भी सबसे ज़्यादा इसे माल होता है।

आकाकल घण्टों शास्त्री गैलेक्सियों का वजन माप सकते हैं, और इससे हमें पता याला कि हबल क्रम — अंडाकार से सर्पिल — बाकई में गैलेक्सियों के घटने वर्णन का क्रम है।

गैलेक्सियों के आकार और वजन क्यूँ इस तरह जड़हैं, ये अझी भी हम समझ नहीं पाएँ।



अनुवादक : झांदा दास गुप्ता
<http://www.tumipl.org> पर जाएँ



गते के अंधेरे आसमान में हमें धूधली रोशनी का बड़ा सा पट्टा दिखता है। प्राचीन यनानी इसे 'क्रिक' के बलाते थे प्राचीनोंने जिस भारत, और चीन में इस आकाश की नदी या आकाशगग्न की तरह देखा जाता था, जबकि साईबरिया के लोग इसे एक आकाश-रूपी पदाल की सिलाई के समान सोचते थे। प्राचीनों का लाल से ही वैज्ञानिक इस पट्टे को बेहतर समझने की कोशिश में है। प्राचीन यनान के अनकसागोरस या महायकालीन फारस के अल बैरूनी जैसे कई विवान सोचते थे कि ये पट्टा कई तारों के जुटने से बना है। जब १६१० में गैलिलियो गैलिली ने अपनी दूर बीन से आकाशगग्न को देखा तो ये सौंच सही साबित हई। उन्होंने दिखाया कि ये धूधला रेखाएँ का पट्टा वाकई में कई धूधले जारों का समूह है।